Vijay Kumar Jha
Asstt Prof
Deptt in History
V.S.J College Rajnagar.

Degree part III
Paper - VIII

# Modernization of Iran under Rajashah pahalvi.

विश्वयुद्ध समाप्त होने के उपरान्त एशिया का वातावरण उद्वेलित था इरान इसका अपवाद नहीं था। इरान ब्रिटिश प्रभुत्व से मुक्त होना चाहते थे जिसका नेता जियाउद्दीन तावताई था उसने कजाक दस्ते के एक अफसर रजा खाँ को उभारा जिसने इस दस्ते से रुसी सेना नायको को हटा दिया अपने सैनिको के साथ तेहरान मे प्रवेश कर गया और वहाँ के सभी सरकारी दफ्तर पर कब्जा कर लिया। जियाउद्दीन ने फरवरी 1921 मे एक नई सरकार बना ली जिसमे रजा खाँ को युद्ध मंत्री एवं सेनापति का पद दिया।

रजा खाँ एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति था वह आधुनिकता का समर्थक था किंतु जनतंत्र मे उसकी आस्था नही थी। उसने जियाउद्दीन की हत्या करवा दिया तथा 25 अप्रिल 1926 ई० को रजाशाह पहलवी के नाम से मयूर सिंहासन पर बैठा उसका राजवंश पहलवी राजवंश के नाम से मशहूर हुआ। रजाशाह एक कुशल प्रशासक एवं क्रांतिकारी सुधारक थे। उसका प्रमुख उद्देश्य इरान को एक नवीन आधुनिक राष्ट्र का रुप देना था। उसने इसके लिये यूरोपीय ज्ञान-विज्ञान एवं संस्कृति को अपनाना आवश्यक समझा। रजाशाह मुस्तफा कमाल पाशा से भी प्रभावित था तथा पाश्चिमी तौर तरीके अपनाकर इरान को एक आधुनिक राज्य बनाना चाहता था। इस काम के लिये उसे काफी जन समर्थन मिला। उसने निम्न सुधार किये।

(1) सेना मे सुधार :- राजनीतिक स्थिति सुधार के लिये सेना का पुनर्गठन रजाशाह ने आवश्यक समझा। इसके लिये उसने सैनिकों के सैनिक शिक्षा, अनुशासन, समय पर वेतन आदि का प्रावधान किया

फलतः ईरान में एक सुसंगठित सैनिक तैयार हुये। इस सैनिक के मदद से ~~विरोधियों~~ विरोधियों का दमन होता।

(2) यातायात का विकास:- देश में एकता कायम करने के लिये यातायात में सुधार आवश्यक था जिसमें वे जर्मन विशेषज्ञों से मदद लिया। यातायात के लिये रजाशाह ने - सड़कों, रेल लाइनों पुलों का निर्माण करवाया। रजाशाह ने ट्रांसइरानियन रेलवे द्वारा तेहरान को फारस की खाड़ी जोड़ा। जर्मनी कि सहायता लेकर ईरान के प्रसिद्ध नगरों को हवाई मार्ग से जोड़ा 1928 ई० में इटली के बेड़ो से दो जहाज मंगाकर नौ सेना कि नींव डाली

(3) - आर्थिक सुधार:- देश कि अर्थ व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिये रजाशाह ने अमेरिका से सहायता प्राप्त किया तथा विदेशी व्यापार को राष्ट्रीकरण किया। 1932 ई० मे तेल व्यापार में मुनाफा की दर 16% से बढ़ाकर 20% कर दिया। देश कई बैंको कि स्थापना हुई तथा उद्योग धंधों कि विकास के लिये कई कल-कारखाना खोले गये चीनी चाय, नमक अफीम एवं पेट्रोल के व्यापार का राष्ट्रीकरण किया गया 1931 ई० में एक कानून के द्वारा विदेशियों को कृषि भूमि पर अधिकार से वंचित कर दिया गया। निश्चय ही इन आर्थिक सुधारों से ईरान कि अर्थव्यवस्था को नया गति मिला

(4) इन सुधारों के लिये प्राचीन परम्परा तथा रुढ़िवादी विचारधारा में परिवर्तन लाना आवश्यक था। सर्वप्रथम रजाशाह ने फारस का नाम बदल कर ईरान रखा। साम्राज्य को धर्म निरपेक्ष राज्य घोषित किया। कई धार्मिक विशेषाधिकार छीन लिये गये तथा धार्मिक समारोह पर पाबंदीयाँ लगा दिया गया। कुई उपाधि जैसे - हज्जी करबलाई, मशहदी आदि हटा लिया गया।

(5) शिक्षा एवं साहित्य में सुधार:- रजाशाह ने शिक्षा के प्रसार के लिये धार्मिक शिक्षा को अनिवार्य कर दिया तथा कई स्कूल खोले। 1921 ई० में सिर्फ शिक्षित जनता शिक्षित थी वह 1939 ई० में बढ़कर 33% हो गया। 1934 ई० में तेहरान में एक विश्वविद्यालय खोला गया तथा एक अभियांत्रिक महा-विद्यालय तथा कृषि विश्वविद्यालय स्थापित किये गये तुर्की कि तरह तो यहाँ शैक्षणिक प्रगति तो नहीं हो सकी परन्तु बौद्धिक

Scanned with Cam

जगत में एक हलचल अवश्य पैदा हो गया। विकास के

(6) स्त्रियों की दशा में सुधार :— समाज कि सर्वांगीन विकास के लिये स्त्री स्वतंत्रता पर बल दिया तथा पर्दाप्रथा को बन्द कर दिया इत्यादि इसके लिये उसे कई मुल्लाओं का विरोध सहना पड़ा। पुरुषों के तरह स्त्रियों को समान अधिकार दिया

(7) पोशाक में सुधार :— रजाशाह ने ईरानी निवासी के वेश-भूषा में भी आमूल परिवर्तन लाया तथा पूर्वी पोशाकों के पहनने पर रोक लगा दिया। पगड़ी के स्थान पर हैट पहनना अनिवार्य कर दिया। महिलाओं के लिये भी यूरोपीय पोशाक पहनना अनिवार्य कर दिया गया। अपने इन सुधारों का प्रचार के लिये रेडियो स्टेशन भी खोला गया।

(8) भूमि संबंधी सुधार :— भूमि संबंधी सुधार के लिये रजाशाह ने भूमि के सर्वेक्षण तथा बन्दोबस्ती की व्यवस्था किया। 1992 ई० में एक कानून बनाकर सम्पत्ति से संबंधित दस्तावेजों का पंजीकरण आवश्यक कर दिया गया। 1940 ई० में एक कानून के द्वारा कृषि विकास कानून लागू किया जिसके द्वारा, नहरों का निर्माण, सिंचाई तथा सड़कों के देखभाल के लिये कृषकों को अधिकृत किया गया। अजर बैजान में सिंचाई के लिये एक कम्पनी बनाया गया।

निसन्देह रजाशाह ने ईरान के उत्थान के लिये कोई कसर नहीं छोड़ी और उनके प्रयास से ईरान एक आधुनिक राज्य कि श्रेणी में आ गया। इसलिए रजाशाह को इन सुधारों में काफी कठिनाईयाँ हुई। प्रथम विश्व युद्ध के बाद में सुधार कार्य चालू हुआ किन्तु द्वितीय विश्व युद्ध आरम्भ हो गया और सुधार कि समस्त योजनायें ठप पड़ गई। द्वितीय विश्व युद्ध के अवसर पर ब्रिटीश और रूसी प्रचारकों ने रजाशाह को तानाशाह के रूप में उभारा ताकि रजाशाह कि प्रतिष्ठा धूमिल हो सके किन्तु ऐसा नहीं हो सका।